

## Landing of 'Flying Gurnard' in Mumbai

A rare fish 'flying gurnard' was landed by a trawler operating in 70-100 m depth in the sea off Mumbai. The species was identified as *Dactyloptena peterseni* (Nystrom, 1887) and it is reported for the first time along the Indian coast.

The fishes belonging to the family Dactylopteridae are commonly known as Flying Gurnards. This common name arose in the belief that with their large pectoral fin they could fly or glide for short distances. However, there is no evidence that they ever leave the water and fly or glide. However, they have characteristic 'Helmet like' skull with a strong pre-opercular spine due to which many have suggested that these fishes should be called as 'Helmet Gurnard'.

On 8<sup>th</sup> May 2009, about 20 fishes with strikingly different morphology and colour pattern were landed at Sassoon docks in Mumbai. They were caught by a trawler operating at 70-100 m depth off Mumbai. The fishers, fish vendors as well as the onlookers were awestruck to find such weird crocodile looking fishes and suspecting them as poisonous. Four specimens were brought for taxonomic identification and biological observation at the Mumbai Research Centre and details are being worked out. The species *D. peterseni* showed absence of 2<sup>nd</sup> dorsal spine, which in other species usually occurring in the Indian waters, is present. The species belonging to the Genus *Dactyloptena* have no fishery importance therefore, no separate statistics are available. If caught incidentally, they are marketed fresh but rarely used as a food. They are mostly used in marine aquarium, especially *D. orientalis*.

(Reported by P.S. Salvi and V.D. Deshmukh, Mumbai Research Centre of CMERI)



*Lobophytum crassa*, Soft coral



**Flying Gurnard : *Dactyloptena peterseni***

## मुम्बई में 'उड़न गुर्नाड' का अवतरण

मुम्बई के समुद्र में 70-100 मी की गहराई में परिचालित आनायक द्वारा असाधारण मछली 'उड़न गुर्नाड' का अवतरण किया गया। इस जाति को *डक्टाइलोप्टीना पीटरसेनी* (नाइस्ट्रोम 1887) पहचाना गया और भारतीय तट से पहली बार इसका अवतरण किया गया।

डक्टाइलोप्टेरिडे कुटुम्ब में पायी जाने वाली इस मछली को सामान्यतः उड़न गुर्नाड नाम से जाना जाता है। यह सामान्य नाम

इसलिए पड गया कि अंस पख का आकार बडा होने के कारण वे कम दूरी तक ग्लाइड कर सती हैं। लेकिन ये पानी के बाहर कहीं उड़ जाने का कोई सबूत नहीं है। फिर भी, उनके 'हेल्मट' जैसी खोपडी और दृढ़ ओपरकुलार कांटा होते हैं और इस कारण से कई लोगों ने यह सुझाव दिया कि इनका नाम 'हेल्मट गुर्नाड' रखा जाना चाहिए।

मुम्बई के सासून डॉक में 8 मई, 2009 को विभिन्न रूपविज्ञान और रंग से युक्त 20 मछलियों का अवतरण हुआ और इन्हें मुम्बई

के समुद्र में 70-100 मी की गहराई में परिचालित आनायकों द्वारा पकडा गया। मछुआरे लोगों, पणधारी लोगों और आम लोगों ने अत्यंत विस्मय से इन मछलियों को देखा और उन्हें यह संदेह हुआ कि ये मछलियाँ विषैली होंगी। चार नमूनों को वर्गिकी विज्ञान पहचान और जीव विज्ञान आकलन के लिए मुम्बई अनुसंधान केंद्र को लाया गया और इसका विवरण आकलित किया जा रहा है। *डी. पीटरसेनी* जाति का दूसरा पृष्ठीय कांटा अनुपस्थित था, जो सामान्यतः भारतीय समुद्रों में पायी जाने वाली जातियों में उपस्थित था। वंश *डक्टाइलोप्टीना* की जातियों की मछलियों की मात्स्यिकी में कोई प्रमुखता नहीं होने की वजह से इन पर अलग रूप से आंकडा उपलब्ध नहीं है। आकस्मिक पकड में प्राप्त नमूनों को ताजी स्थिति में बेचा जाता है और खाद्य के रूप में बहुत कम उपयोग किया जाता है। इन्हें, विशेषतः *डी. ओरिएन्टलिस* को अधिक तौर पर समुद्री जलजीवशाला के नमूने के रूप में उपयुक्त किया जाता है।

(पी.एस. साल्वी और वी.डी. देशमुख, सी एम एफ आर आइ, मुम्बई अनुसंधान केंद्र द्वारा रिपोर्ट किया गया)